सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ

सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक समाज का सार्वभौमिक नियम है। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(1) सामाजिक परिवर्तन एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन दुनिया के हर समाज में घटित होता है। दुनिया मे ऐसा कोई भी समाज नजर नही आता, जो दीर्घकाल तक स्थिर रहा हो या स्थिर हो। यह सम्भव है कि परिवर्तन की रफ्तार कभी धीमी और कभी तीव्र हो, लेकिन परिवर्तन समाज में चलनेवाली सतत प्रक्रिया है।

(2) सामाजिक परिवर्तन के विविध स्वरूप होते है। प्रत्येक समाज मे सहयोग समायोजन, संघर्ष या प्रतियोगिता की प्रक्रियाएँ चलती रहती है, जिससे सामाजिक परिवर्तन विभिन्न रूपों मे प्रकट होता है। परिवर्तन कभी एकरेखीय तो कभी बहुरेखीय होता है अर्थात परिवर्तन कभी समस्यामूलक होता है, तो कभी कल्याणकारी। परिवर्तन कभी चक्रीय होता है, तो कभी उद्विकासीय। कभी-कभी सामाजिक परिवर्तन क्रान्तिकारी भी हो सकता है। परिवर्तन कभी अल्प-अवधि मे होता है तो कभी दीर्घकालीन।

(3) सामाजिक परिवर्तन की गति असमान तथा सापेक्षिक होती है। समाज की विभिन्न इकाइयों के बीच परिवर्तन की

गति समान नहीं होती है। सामाजिक संरचना के कुछ अंगों में परिवर्तन की गति भी समान नहीं होती है। सामाजिक संरचना के सभी पहलू समान रूप से गतिशील नहीं होते हैं, जैसे सामाजिक संगठन की अपेक्षा आर्थिक व्यवहार में परिवर्तन ज्यादा तीव्र गति से होता है। दुनिया के सभी समाजों में परिवर्तन समान रूप से नहीं होता है।

(4) सामुदायिक परिवर्तन ही वास्तविक सामाजिक परिवर्तन है। इस समाज का सम्बन्ध नहीं होता सामाजिक परिवर्तन का संबंध व्यक्ति विशेष व्यक्ति या समूह के साथ तक ही नहीं होता है। संक्षेप में, सामाजिक परिवर्तन की धारणा वैयक्तिक नहीं बल्कि सामाजिक है। यह विचार थोड़ा विवादास्पद भी हो सकता है पर अधिकांश समाजशास्त्री इस बात को मानते हैं।

(5) सामाजिक परिवर्तन की कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। इसका मुख्य कारण है कि अनेक अप्रत्याशित कारक भी सामाजिक परिवर्तन को पैदा करते हैं। इसलिए सामाजिक परिवर्तन के निश्चित स्वरूप की भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप मार्क्स ने पूंजीवाद के अन्त में समाजवाद के उदय की भविष्यवाणी की थी, लेकिन यह परिवर्तन अब तक साकार नहीं हो पाया है और न ही होने की संभावना है।